

DPN 6349

Title: पद्मपुराण विष्णुनाम सहस्र PADMA PURĀṆA VIṢṆU NĀMA  
SAHASRA

Run. No. 7040

Cat. No.

Micro. No.

Subject Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 x 8.4

Folios 28

Lines ( in a page ) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

मानदास सुगतदास

Māna Dāsa Sugata Dāsa

Date: NS / SS / VS / KS 931

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

म ॐ नमो श्री नारायणाय ॥ तैत्तिरे तैत्तिरे : क्षेत्रे मृषयः शौनकादयः ॥  
देवर्षि मुपसगम्य पत्रच्छुरि दमादरात् ॥ ॥ P.T.O



△ इति श्री पञ्चपुराणे शिवपार्वती संवादे विष्णोर्नाम सदृशकं समाप्तं ॥ ॥  
सम्बत् ५३१ भागशीर शुक्ल पूर्णमासी सोमवान् पूर्ण लिखितम् ॥



ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰ ਸੰਗਠਨ  
ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਭਾਗ - ਫੰਡ ਪ੍ਰਬੰਧ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नेमिषनिमिषः कुरुः प्रवयः ॥ ओ न काद  
 यः ॥ दवर्षि मूयसगम्य यय कुरु निदमादनात् ॥ १ ॥ यूनम्य उवाच  
 ॥ वक्रताकादि ह्यार्कना न दं हगव प्रियं । दृष्टान्ता स हो या कय  
 य कुरु मूतया मदात् ॥ २ ॥ अथिय उवृष्ट ॥ ॥ वक्रन कनय कानन १  
 सव्यया य मूचत ॥ विनादान न तय सा विनाती (थे विनाम रे ॥  
 ३ ॥ दवादि वदवर्गं किर्तय सिम कर्न ॥ कथमाना धय नः

मानदास सुगत दासया संकलनं

बाशा सफु-कुशितात उपहार !

वं ऊय ध्यान यमायर्ष ॥ ४ ॥ श्रीनाम दउवाच ॥ कुरु दमव यूनादृष्ट  
 : यार्वेत्यायन न म्यन ॥ यदुवाच गुरुः स्वतः कथयामि सुविस्मर्त ॥ ५ ॥  
 कला मनीखनासीनं दवदवं ऊगगुर्वं ॥ यनियत्य महादवं ययय  
 कुरु माप्रियं ॥ ६ ॥ श्रीगार्वह्युवाच ॥ हगवस्त्वं यनादव सर्व कुरु सर्व  
 यूजित ॥ तस्मिन् मूचत दवे वक्रसूर्यादिकेन पि ॥ ७ ॥ ललाहिल  
 हकहिमती सिद्धि सर्ववत् ॥ त्वं कुरु मय्यनरित ॥ स्वयं ह सर्व भक्ति  
 मा ॥ ८ ॥ सदा ध्यायसि किं सा मि ॥ दिग्गसा मदनानक ॥ तय म्यन



सि क म्मा सि तं ऊ टि ला ए स्म ध न स ॥ २ ॥ किं वा ऊ य सि ध व म य न  
 को उ रु लं हि मे ॥ अ नू य का प्रि या ता स्मि त त्वं क थ य स व त ॥ १० ॥  
 अ म हा द व उ वा व ॥ अ दं त स्या पि क धि र्ते ल भ ये ती य मि दं म म ॥ कि  
 उ व आ मि र द्रु क त्वं ए का सि प्रि या सि म् ॥ ११ ॥ यू ना स त्थ यू ग द वी  
 वि भु द्ध म त या सि ला ॥ ऊ ऊ कि वि भू मे वे कं झा हा स र्वे म्भ त म्भ नः  
 ॥ १२ ॥ यु या कि य न मा मृ दि मे हि का मृ षि की ल्य रा ॥ या न या य्या स

ने ॥ स र्व त्र क या क म व र्कि ता ॥ १३ ॥ न तां ग तिं यु य अ क वि ना रा ग  
 व ता न्न ना न ॥ म म्भ खा द पि सं ग्र ह्य द वा वि भू व हि म्भ खा ॥ १४ ॥ व  
 द ॥ यू ना लो ॥ सि द्धा के हि त्रे वि श ते न त स ॥ नि म्भ ये ला धि ग क्क नि  
 किं त त्वं कि म्भ त्र य दं ॥ १५ ॥ उ ला यू नू य दा ना ये न म्भ म्भ दि हि म्भ  
 खे ॥ वा ना ल सी यु या म्भ दि ता र्थ स्ना ना दि हि ॥ पि य ॥ १६ ॥ रा या म्भ द्वा  
 दि हि ॥ पि यो व द या भ दि हि र्क ये ॥ त था हि नू लो र्त्रि य मे र्थ मे र्  
 त द या दि हि ॥ १७ ॥ अ नू गु म्भ य ले ॥ स त्थ ध म्भ व लू गु म्भ दि ता स्म







वयथा मरु य ऊ अ द्वा ह विष्य सि ॥ तामा ना ध य था मं हा ग  
 हा ध्या मि व न कृ व ॥ २१ ॥ वा य ना दी यू ग ह ता क ल या मा नू  
 धा दि वू ॥ सा ग मे ४ क लि ते स्तं व ऊ ना न्म दि मू खा नू ॥ २२ ॥  
 पां च ग मे य य न स्या हृ दि न का रु ना रु ना त त सं यु नि य या ह  
 म वा चं य न म न्ध नं ॥ २३ ॥ श्री महा द व उ वा च ॥ उ क्त ह वा स  
 हृ द्रु स्या या र्थ सा म्य क्थं व ना न य न हृ द वि क्ता न क ल्य की  
 ति स ते न पि ॥ २४ ॥ य स्मा न्न या क ता स्य ह्य य वि उ स्या क थ

ह न ॥ ग म च क स र्व या या ति त म्वां व द सू ना रु म ॥ २५ ॥ न स्य कि स र्व या  
 या ति त न्म व द सू न म्ध नं त दा हृ द वा ग्म वि द्वा म म यी त्या ये अ त र्थं ॥  
 २६ ॥ श्री रु ग वा न् उ वा च ॥ स दा ना म स हृ द्म म या व न म स य दा व ह ॥  
 त न्य (अ न्) दि नं म क्ता स र्व ग्ध र्थ य दी कृ सि ॥ २७ ॥ श्री महा द व  
 उ वा च ॥ त म व त य सा नि र्थं ह ऊ मि स्ता मि वि क्त य ॥ त ना हि त  
 य म हि मा ऊ ग न्य क्ता मि या र्थ ति ॥ २८ ॥ श्री या र्ध य वा च ॥ त न्म  
 क थ य द व म य था रु म पि म क्त न ॥ स र्व ग्ध र्थ नि नू य मा त व स्मा



सुदमायुः ॥ ३५ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ साधु साधु त्वया यद्वं  
 विष्णु एगवतः ॥ युः ॥ नाम्नीं सुदमं वक्ष्यामि मुखं तुला वाम  
 किदं ॥ ३५ ॥ ॥ अथ ग्राह्यं गवता विष्णुर्वा मसह मुस्य ग्रा  
 महादेव मुविशामु नू यद्वं ४ ग्रा वा सुदवा दवना सुय  
 काटि युका मं ति वी कं । ग क्ता ती (अ) रु मं ती म किः ग्रा वा  
 सुदव या ति पूर्व क म मे त द्वा वा सुदव ना म स रु मे मि लु के हि  
 का मुष्मि क स क ल मु रु ल प्रा य द्वा (अ) रु य वि ति या गः ॥

३० ॥ श्री न ४ ॥ विष्णु एव किं वा ग दव ल य ग ला क ल्य हा ना  
 द वां धिं (अ) ला ह वा स व क्ता म लि म क न म हा कु लु ला मं ति ता  
 रु रु ला य च कु मं खा म् उ ग द म म लं यी त को य य वा ना  
 मा वि या त हा स म य दि दि न क न म द मं य द्वा सं क्ति न मा  
 मि ॥ (अ) य ४ स द्वा स वि रु म लु ल म व रु ति ना ना य ल ४ सः  
 न सि जा स न स ति वि रु ४ क यु न वा न क न क कु लु ल वा न  
 कि वा टी हो नी रु न न्ध य व य द्वा त मं ख व कु ४ ॥ ४३ ॥



वासुदवः यनं वक्र यन म्मा पना ल्यनः यन ह्यम यनं  
 क्राति यनं तत्तं यनं यदं ॥ ४४ ॥ यनः निवः यनाः (ध्वयः  
 यनं क्लनं यना गति यन मर्थः यनं (ध्वयः यना नन्दः यना  
 दयः ॥ ४५ ॥ यनाः यका यनं याम यन हिः यन म्म यनः  
 निना मया निर्विका ना वि वि क ल्या निना मयः ॥ ४६ ॥ निनं  
 ऊना निना लं वा नि स यो निन व ग्रहः निर्गु (म नि क लान का  
 र्या वि ह्या य ला च तः ॥ ४७ ॥ मृती दि या मि ता या ना नी (म

ना हा यथा क यः सर्वः सर्वगः सर्वः सर्वदः सर्व लावनः ॥  
 ४८ ॥ सर्व मा सा सर्व सा जी यः सर्व स्य सर्व द का सर्व म किः सर्व  
 सा नः सर्व सा सर्व ता म्खः ॥ ४९ ॥ सर्व वा सः सर्व त्र यः सर्व दि  
 सर्व दः ख हाः सर्व र्थः सर्व ता ह दः सर्व का ने ल को न ली ॥ ५० ॥ स  
 र्वो नि सा य केः सर्व श्व कः सर्व म्म न म्म नः घट्टि म का म हा वि ब्रू  
 म्म हा गु क्ता म हा वि उ ॥ ५१ ॥ नि ह्या दि ता नि य य का नि ह्या नन्दः स  
 ना त नः मा या य ति या ग य ति के व ल्य य ति ना स्म ह ॥ ५२ ॥ ऊत्त







॥१॥ श्री सुदा पाश यादा का न क श्री ॥ श्री निक व न ॥ निर्यं व क ॥ रु ल  
 रु श्री ॥ श्री नि धि श्री धना रु नि ॥ ॥३॥ व ग्य श्री नि म्य ल श्री दा विष्णु जी मा  
 विम नि न ॥ को मु हा हा मि ता व का मा ध वा क ग दा रि हा ॥ ॥४॥ श्री व ल  
 व का नि ॥ सी म क ल्या ल गु ल हा ज न ॥ पी ता म्भ ना क ग ना र्था क ग दा ता क ग  
 रि ता ॥ ॥५॥ उ ग दं ध र्ज ग ल्य श्री उ ग दा ता क ग रि धि ॥ उ ग द व म्भ न  
 द्वि र्था ना रु वा दा क ग म्भ य ॥ ॥६॥ सर्व श्र र्थ म य ॥ सर्व सि द्ध र्थ ॥ सर्व  
 या न जि न् ॥ सर्व मा या य मा व क्त्वा न्द्रो य रु छि य त न ॥ ॥७॥ मं हा पि

ता म हा व द्वा पि ता न्द्रो य धा म्भ य ॥ सर्व द व प्रि यं सर्व द व म्भ रि न न्  
 रु म ॥ ॥८॥ सर्व द वे क म न न ॥ सर्व द वे क दे व र्ता ॥ य रु उ म्भ रु ल  
 दा य रु म्भ य रु हा व न ॥ ॥९॥ य रु जा ता य रु य मा न व न मा ला धि क पि  
 य ॥ कि क क मा न दा वि य रु ल द वा सु ना क क ॥ ॥१०॥ सर्व दु स्था न क क  
 सर्व स र्ज ना न न्द्रो य ल क ॥ स फ ला के क क ० न ॥ सर्व ला के क म गु ल  
 ॥ ॥११॥ रु छि रि य न रु र्च को म्भ म्भ ना ग दा ध न ॥ मं ख रु न न्द्र  
 की य म्भ यो नि ग न्द्रो व रु न ॥ ॥१२॥ अ नि द म्भ व य ॥ सर्व ॥ सर्व



ला कया वनः॥ नूनक कोहिनः॥ सोमयोत्र सर्वमंगल॥ १३॥  
 सूर्य काटि पुनी काष्मय मकाटि दूना सदः॥ वक्र काटि जगन्मुखा वा  
 सू काटि महावल॥ १४॥ काटी नू जगदोन नदी मीउ काटि मरु म्वनः॥  
 कुवन काटी लक्ष्मी वान् मूक काटि विलसवान्॥ १५॥ कंदर्प काटि ला  
 वल्लभं दुर्गम काष्म निमर्दनः॥ समूद्र काटि गंगा नदी र्थ काटि समाक  
 यः॥ १६॥ हिमवत् काटि निः कंय काटि वक्रा लु विह्वलः॥ काष्म म्व  
 मध्याय प्रायस्क काटि समावर्तनः॥ १७॥ सूक्ष्म काटि सास्त्र रुद्र का

मधु काटि कामदः॥ वक्र विद्या काटि नू यः॥ मिथि विह्वलः॥ मुविश्व वाः॥  
 ॥ १८॥ विम्वल न सार्थ यादः॥ यूष्म सनल कीर्तनः॥ आदि दवा जगः  
 ऊष्म मूक नू का न ल मिह्वल॥ १९॥ वेक ल्भ न न्य माहात्म्या महायागा  
 सनात्म वः॥ नित्य रुका ल स एवा निः मं कान न का न कः॥ २०॥  
 दोनानो ये कम न ल विष्म के य सना य रुः॥ जग रुया क मानि त्य रु  
 पालः॥ सुकूना म्व यः॥ २१॥ आल म्व न सदा दो ल्भ देहि रुय विवर्ति  
 तः॥ अक्ष क का विम्व न ताः॥ य जा य ति सदा वि यः॥ २२॥ मूक रुका



चित्तमदः मंतुर्वेदादधमगः॥सूर्यमाभाकृत्तविश्वहाकासर्वः  
 श्यानगः॥६३॥कृत्तमंतुर्वेदादधमगः॥सूर्यमाभाकृत्तविश्वहाकासर्वः  
 माविलताकृत्तमंतुर्वेदादधमगः॥६४॥वम्यमायावम्यः  
 विष्णुविष्णुनःसूर्यालमः॥सर्वमयेःयतिर्दद्यानर्थाहवत  
 हृषितः॥६५॥सर्वलोकलोकलोकःसर्वदृष्टदृष्टयथाहासमस्तुदव  
 सर्वस्वःसर्वदेवतनायकः॥६६॥समस्तुदवतादूर्गःयुयनामनि  
 यंजलः॥समस्तुदवकवयःसर्वदेवमित्रामलिः॥६७॥समस्तुद

यतिनामाहगवान् विष्णुनम्रवाःविश्वःसर्वहितादर्कोहतानिःस  
 गतियुदः॥६८॥सर्वदेवतजीवन्मात्राकृत्तमदिन्याजकः॥वक्र  
 मंतुःयनाद्यायःवक्रकृत्तमिमुःस्वनाः॥६९॥विनाहकःयनाधी  
 नःसूर्याःकारार्थसाधकः॥यनार्थकर्ताहृष्टःस्वार्थदृष्टसदा  
 कीर्तः॥७०॥सदानः॥सदाहृष्टःसदासाकःसदानिवः॥सदापि  
 यःसदाहृष्टःसदाहृष्टःसदावितः॥७१॥सदायुतःयावनाः  
 वदगुप्ताहृष्टवाक्यिः॥सहप्रनामायिगम्युमूर्तिम्युतुः॥७२॥

५२



॥ २३ ॥ हत हय हवना (अ) म हा यू व यू ऊ र्व ॥ नाना य (अ) मू ऊ कम  
 ॥ सर्वथा ग वि नि स्मृत ॥ २३ ॥ य द सा ना य रू सा न ॥ सा म सा न रु या  
 नि वि ॥ सा य ॥ य ॥ य ना ल र्षि नि द्या सा नि ॥ ये ना य ल ॥ २४ ॥ नि व  
 रि मू ल वि श्व सा ग्री क (अ) के व न यु द ॥ न न ॥ क रू र्नि र्द र्म न न द  
 ना य र्म जी व न ॥ २५ ॥ आ दि क र्ण सर्व स र्व ॥ सर्व सा न न द र्प  
 हा रि का ल जि त र्क द र्प ॥ उ र्व सा रू मी न्ध न ॥ २६ ॥ आ य ॥ क  
 वि रु य ग्री व ॥ सर्व बा गी न्ध न ॥ सर्व द व म या व द्म रू र्व

११

गी न्ध ना य ति ॥ २७ ॥ अ न क वि श्या य र्वा मू ल वि श्या वि ना ग न  
 ॥ सा र्व रू द्वा ऊ ग रू श ना म का म वू रू द न ॥ २८ ॥ अ न क म रु का  
 र्म ॥ म द व रू क या न ग ॥ आ दि वि द्वा न् व द क र्ण व द्या त्मा  
 ति सा ग न ॥ २९ ॥ व द्म र्थ व द्वा द न ॥ सर्व वि द्वा न् ऊ म रू ॥  
 वि श्या ना ऊ रू न मू र्ति रू न सिं धू न रू व रू धी ॥ १०० ॥ म रू द व म  
 रू र्म (अ) ऊ ग रू द्वा ऊ व रू रू व रू क रू ली ला या फा रि ला फा रि म्भ रू र्व  
 द य व रू क ॥ १०१ ॥ आ दि क र्म रू वि ला य न रू नी क रू न ऊ ग रू न



अमराकतदवोयःपीयूषात्यहिकात्रवः॥१०२॥ जालाधनाधनाध  
 नायज्ञागधननाधनः॥ हिनन्नाकहनयथायतिः॥ अदाविकल्यक  
 ॥१०३॥ समस्तपिहृतातिघ्नः॥ समस्तपिहृतावनः॥ हयकवेककुम्ह  
 यकवेककुलदायकः॥१०४॥ तामाकनानेकलधिः॥ अहितामयसा  
 गलः॥ महावनाहायकध्वार्धमनायाहिकाधयः॥१०५॥ श्रीरसिंहदिय  
 सिंहः॥ सर्वनिष्ठाहिदुःखहालकवीनाहुतवनायकुम्हकहंऊन  
 ॥१०६॥१००॥ वद्वदिदुःखहालियुगमाग्यातिहीधनः॥ काटिवडा

12

धिकनखाजगदुद्युक्तमूर्हिधक॥१०७॥ माहयकुयमथनाप्रहामा  
 हगलधनः॥ अविष्णुमाधवीर्योयः॥ समस्तसूत्रयम्भनः॥१०८॥  
 हिनन्नाकनियुक्तदीकालसंकर्षणीयतिः॥ कतानकवारुनः॥ सयः  
 समस्तहयनामनः॥१०९॥ सर्वविविधानकः॥ सर्वसिद्धिदः॥ सर्व  
 पूत्रगः॥ समस्तयातकर्षमिसिद्धिमन्त्रिकाकयः॥११०॥ हिनन्ना  
 हनार्हिघ्नः॥ कात्रकाटिदुःखहालियुगमाग्यातिहीधनः॥ काटिवडा  
 लुगर्जितः॥१११॥ हनमाग्यातिहीधनः॥ काटिवडा



वृक्षवर्यमित्रः यदादिका लाक्षा रुहचलः ॥११२॥ दाद मर्क मिनाय  
 मा त्रुड मीमेक नूयनः । यागिलाय सुमित्रिका शा गाने नव रईकः  
 ॥११३॥ वीत्रवृक्ष म्वनायु आ यमात्रिः कान्त संवनः । का (ध) म्वना  
 दवलीय मिनायादि दुष्ट उक्त ॥११४॥ सुर्व कोशा म्वयु मि वरि क  
 : । म्रसा वः सर्व नागघ्नः सर्व दुर्ग ह सो म्वरु ॥११५॥ गल मेका  
 टि द र्ये घ्रादः स हा म म्वर्य हा । द व दान व द र्द ल्म ऊ ग रु य व  
 हा व कः ॥११६॥ समस्त दुर्ग मिनाया रु ग रु रु क रु क रु कः । ३ (४)

ल्मा म्वत्र मा जी नः कान्त मूषिक रु क रु क ॥११७॥ म्रन नायु व दार्द  
 ल्मा रु सिं हा वीत्र रु द्रु कि वा । या गिला व क रु क मः म कानि य म  
 म न रु क ॥११८॥ त्रुड ना ना म्व ल्म म म्वत्रु य म क न वा रु न म म्वरु  
 य मि व ना ना दू रु म कि रु रु म रु क ॥११९॥ उरु सी व रु हा द वा  
 वा मा वा ना खि ल रु द न म हा मि व मि वा । हा रु न व क रु क रु ल रु  
 क ॥१२०॥ वीत्र वृक्ष म्वत्र म्वरु दि द म्म रु न नू य दः । म्वत्र मा रु  
 म्वे द मा या नि धि मा या रु या य रु ॥१२१॥ वृक्ष रु ट म्म व रु मि म्व  
 म य म्वरु या म्म रुः । सु व रु ल्म व रि धं सी वा म्म ना दि मि दू रु व



हा ॥ १२१ ॥ उच्यते यतिविष्णुः । कश्चिद्यत्नमप्यनुनः ॥ १०० ॥  
 वलिस्यानामदः सर्ववविशानकायातः ॥ १२३ ॥ उच्यते मस्त  
 र्थयोदमिषयश्चपिचिकुमः । वामयोदः सपादाकः पवि  
 दितजगद्ययः ॥ १२४ ॥ उच्यते मस्तरेवर्ग्यधिद्रुतधमोधि  
 यावनः । अविष्ठाद्रुतविस्त्राविम्वरका महावनः ॥ १२५ ॥  
 नाद्रुद्रुद्रोर्गामिद्रुययन्नामिनाहनः । यायायकः सदा  
 पूर्यदेत्यामनिश्वरुनः ॥ १२६ ॥ यन्निताखिलदधमिनि  
 म्मथिकावगात्रकम् । सुमायाखिलयुकात्माहकिविकाम

निःसदा ॥ १२७ ॥ वनदः कर्तुं वीयादिनाकात्राप्रयदानघः । वि  
 म्वरका मितानात्रादहायाम्नाम्वनः ॥ १२८ ॥ यनंमकि  
 सदा मिष्ठागामनदः सदात्मदः । सुमस्त्यानिनकाद्रुत  
 माष्टनयादयः ॥ १२९ ॥ नूनसूयागकनत्तलागमाद्रुतय  
 दः । यममिद्रुतादिशाननकाद्रुतमकिद्रुत ॥ १३० ॥ माह  
 रुयादिनिश्वयः कुरुमिद्रुतनाकाद्रुतः । सर्वकजाकुरुदान  
 दर्थहाकाह्वीर्यजिन् ॥ १३१ ॥ सुद्रुद्रोदनीदातामिका



वार्ययमः यदः। लमः यत्र गुणमश्च मिवाचार्ये कविम्ब हः॥  
 ॥१३१॥ मिवाखिलज्ञानकाया लोभाचार्यः मिदेवतः। द्रव्यवा  
 क्युनूविम्बकेरुधेना कृतकजित् ॥१३२॥ अद्वितीयतया मूर्ति  
 बुद्धवर्त्ये कदक्रिणः। मनः प्रष्टुः समं सुष्ठु महीयादृषलावि ॥१३३॥  
 नात ॥१३४॥ आदिना कृतिपिता सर्वत्रैकदाहकृता यथ  
 ऊमाओ कदकागीः श्रीः कर्हिः स्वयं प्रति ॥१३५॥ ऊगद्वे हि य  
 दम्बकुर्वहि प्रष्टादया मुष्टक। मनकादिमूनिः याय्य एग

वरुकिवर्द्धनः ॥१३६॥ दृष्टाश्चमाविम्बमूर्ति कर्हाहर्हायवर्द्धकः स  
 र्यवैमल्यकात्राभात्राद्यवः सकुलवर्द्धः ॥१३७॥ काकृष्णवीनत्राज  
 र्यत्राजाधर्मधूर्तधनः। निश्चयस्त्वामयसर्वः हृदयाहोमुहकध  
 क ॥१३८॥ नत्रत्रलं तल गकर्हि धर्माश्च कामहानिधिः। सर्वप्रसाध  
 यः सर्वममा सुप्रामदीर्यवान् ॥१३९॥ ऊगद्वे मातामनयिः सर्व  
 नत्राश्रयान्तरयः। समस्तधर्मसुसर्वधर्मादृष्टाखिलाहिकृता ॥  
 १४०॥ अनाद्याज्ञानविज्ञानयानदृष्टाकामाध्विः। सर्वयुक्त



:मिष्टुष्टा रुष (म) का य ना क नः ॥१४१॥ पिशाङ्ग श क मा मा कः स प  
 न्ना द य नि र्ण यः । यु हा द मा र्ण ते म्भ यः मि व स्य र्क्ष ऊ टा ध नः ॥१४२॥  
 किं कू टा फ त्र त्ना दि र्ग म दी (म) व न व नः । य (थ) का भा य स र्क्ष क्रा द  
 व द्य न न या कि हा ॥१४३॥ व द्य द्या दि न ते वी का मा ना व धा वि ना ध हा १०  
 न व द्य द्या य हा ता (म) घ द नु का न य या व नः ॥१४४॥ व उ द र्म स र्क्ष म्भ य  
 न क्रा य के न त्रे क क ता । ख ना नि मि मि ना रु का दू ष ल द्या ऊ ना द नः  
 ॥१४५॥ ऊ टा य धा मि ग ति का । ग म्भ स र्क्ष स या श ना त् । ला ला ध नः

का द्या यार्ध दं दू र्क्ष मि म हा व यः ॥१४६॥ स फ ता ल व धा क ष ध्र सा प  
 ता ल दान वः । स या व ना क्क दारि न्या म न मे वा र य य दः ॥१४७॥ रु नू  
 म दू द मू ख न स म म्भ क पि द रु रु ता । स ना ग द य ता (ले) क या क ली क  
 त मा ग नः ॥१४८॥ स म्भ क्क का टि ता (ले) क मु षु नि र्द म्भ सा ग नः । स म्भ  
 दा र्ध न यूर्ध्व क व र्क्ष स उ य (म) नि धिः ॥१४९॥ म्भ सा ध्र सा ध का र्ण वा  
 स म्भ सा ल्क र्ध (म) क मः । व न द फ ऊ ग क्क य या ल म्भ क ल जा न क क  
 ॥१५०॥ ना व नि ध्रः य रु र्क्ष कि क्क म्भ क क र्णु रि नू य हा । ना व (ले) क मि



नृकृत्तः मं कृत्त कृत्तः ॥१३१॥ स्वर्गो स्वर्गो विष्णु दी द व  
 दानि नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३२॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३३॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३४॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३५॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३६॥

११

नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३७॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३८॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१३९॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१४०॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१४१॥  
 नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः नृत्तः ॥१४२॥



कृतनामद्वितीयोऽभिषिक्तः प्रहृत्युक्तिः ॥ १०० ॥  
 विष्णुर्हृत्कां प्रनामां धिया दृक्कां कृतिर्वृतः ॥ हं गतामस्य  
 गंधर्वः काटिघातं वनात्कृतः ॥ १०१ ॥ मरुद्वावेयं नो ज  
 युवदगकोषधायिनिः ॥ निष्ठा मृतकना धन्यं न त्रिर्यद्वा  
 उगद्वनः ॥ १०२ ॥ सूर्यो निधुः सूनाजीवा दृक्त्रिभुवः ॥ अद्विज  
 प्रियः नृत्तिर्नृत्तिर्नृत्तिर्नृत्तिः ॥ नृत्तिर्नृत्तिर्नृत्तिर्नृत्तिः ॥ १०३ ॥  
 विष्णुर्हृत्कां प्रनामां धिया दृक्कां कृतिर्वृतः ॥ हं गतामस्य

१८

दिनामाभिर्वदधर्मयनायनः ॥ १०४ ॥ एतन्दीययनामासायनः प्रलता  
 सवसिद्धिनाट विष्णुका नितज्ञानया एतामाहृतमिमुहः ॥ १०५ ॥ द  
 वेहृत्कां प्रजः सिद्धः कपिलः कर्दमात्मजः ॥ योगसाभिष्ठा न हं न  
 मगनात्मज एतद्वा ॥ १०६ ॥ धर्मादिषु द्वः सूनाजीवा दृक्त्रिभुवः ॥ अद्विज  
 स एतविनः गंतुं क्रियुं न दाहे कहे र्था विष्णुर्हृत्कां प्रनामां धिया दृक्कां कृतिर्वृतः ॥ १०७ ॥  
 कर्मांतुं क्रियां दध्म तवापी समुत्तमः ॥ मरुद्वावेयं नो ज  
 द्वितीयाभिर्वदधर्मयनायनः ॥ १०८ ॥ एतन्दीययनामासायनः प्रलता



य ३

प्रिमिनाउरुः रुनामनिकलकावशाकिताद्युवदक्रियः ॥ १०२ ॥  
 कालामिन्द्रजनकासुमलाष्टाहृत्युधः नीनामवनादिवात्र  
 लीलासुमनावाकायद. खल ॥ १०३ ॥ २ संभाषाद्विमाशयाति  
 नददमननः वसि संमंनः धात्रोहिनेयः युसंवहः ॥ १०४ ॥  
 पश्चिमधुद्विदिदहाकासिन्दीकर्षलंवतः प्रवतीनमनः पूर्व  
 र. खदाशतायुजदवर्क वधुदवाककस्ययादितिनन्द  
 न ॥ १०५ ॥ वायुयः सात्वतः ॥ १०६ ॥ मोत्रियदकलादहः नना

१२

कतिघनंवक्रसुयसावीवनयुदः ॥ १०७ ॥ वक्रादिकाम्यलातिरुजग  
 दासुयमेभवः युतनाद्यः भकटरियमलार्जन. रंजन ॥ १०८ ॥ वातास  
 नाभिः कमिध्राधेनूकानिर्गवीभनः दाभादनालयदवा. यलान  
 दकासकः ॥ १०९ ॥ कासीयमर्दनः सर्वलपलयाजनधियः लीला  
 वर्दनधेनालयविद्यालयसु. लासुवः ॥ ११० ॥ अनिष्टमथनः कामास  
 ललयविमूकिदः सयः कवेनयायाडि. यातोचालुमर्दनः ॥ १११ ॥  
 कंसात्रिभूयसनादिनामयायात्रितामत्रमसूधमाकिरहलाकाज



ना संश्ववनाकः ॥ १०८ ॥ सुकृत्तमजनासं (अ) लामसनयमः युद्ध  
 ॥ सादोयनामनादहाकाताकुत्तुकादिजित ॥ १०९ ॥ समसुतावर्ग  
 शागासर्वहयतिकाटिजित ॥ ११० ॥ सुकृत्तमजनासं (अ) लामसनयमः युद्ध  
 नकता ॥ ११० ॥ समसुतावर्ग शागासर्वहयतिकाटिजित ॥ ११० ॥ सुकृत्तमजनासं (अ) लामसनयमः युद्ध  
 तत्रुडोर्कमनूदाययिसंभनः ॥ १११ ॥ दवद्वदर्थहाकत्यदुमात  
 कतहृत्तलः ॥ ११२ ॥ वानवाकसेरुमाच्छिन्नयादिगलकाटिजित ॥ ११३ ॥  
 लीताजितमहादधामहादवकयुजितः ॥ ११४ ॥ दार्थरुननिर्हृत्

क४  
 कथयः गावुवेककृत् ॥ ११५ ॥ कामिनाऊमिनकृत्तुदसुक्ककमर्दन  
 ॥ वि (अ) मयत्रयमादाये कामिनाऊसुताद्वनः ॥ ११६ ॥ मंउपुतिज्ञाविध  
 लीकाजीनिर्दग्धनायकः ॥ ११७ ॥ कामिनाऊसुताद्वनः ॥ ११८ ॥ मंउपुतिज्ञाविध  
 ॥ ११९ ॥ सुवतीवृत्तयावस्थः ॥ १२० ॥ कामिनाऊसुताद्वनः ॥ १२१ ॥ मंउपुतिज्ञाविध  
 कृत्तुदसुक्ककमर्दन ॥ १२२ ॥ मिटकृत्तुदसुक्ककमर्दन ॥ १२३ ॥ मंउपुतिज्ञाविध  
 निहामहाद्विवागुमेनी ॥ १२४ ॥ कामिनाऊसुताद्वनः ॥ १२५ ॥ मंउपुतिज्ञाविध  
 दुक्कनिष्कातचवन ॥ १२६ ॥ कामिनाऊसुताद्वनः ॥ १२७ ॥ मंउपुतिज्ञाविध



अः॥१८८॥ अमदात्रेक ए कार्थः ॥ अनीतद्वेहवः॥ दूर्धर्तु निमुयाता  
 दिभ्रकिदाद्यदिकम् ॥१८९॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 टिकिताश्रकशास्त्रवमूखिक ॥१९०॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 लकोजिमुनवागीकाननवः ॥१९१॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कदातः॥१९२॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 सुहाय्यादितुकोनवः॥१९३॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 मोहहितागर्कमायकतुखसुयादवावीहमायहः॥१९४॥ अनासादिक

दिगतिदः ॥१९५॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कक ॥१९६॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥१९७॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥१९८॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥१९९॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥२००॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥२०१॥ अनासादिकयायदानकानिभिको  
 कादिहः ॥२०२॥ अनासादिकयायदानकानिभिको



कः यत्र वं मरुतः । वृद्धाश्च न जिता । मय दद वी उग गयियः ॥ २०० ॥ नि  
 नाय ध उ ग कूः श्री य ना दू ष मा ह नः । दे ख व द व हिक क र्त्त व दार्थ भूति  
 (मय कः ॥ २०० ॥) (मो द्दो द नि म्र ष द ष सु ख दः स द सु ख तिः । य भ या  
 म्म खि ल क यः सर्व सु शा खि ल ष दः ॥ २०१ ॥ व उ का टि ये च क र्त्त य म  
 पा न मि त म्भ नः । पा ख लु व द मा र्ग म या ख लु कृ तिः (मय कः ॥ २०२ ॥  
 क क्का वि भू य म य उ क लि का ल वि ना य क ॥ स म रू म्भ ष द ष द्रुः सर्व मि  
 ष द्वि जा ति के त् । स ख य व र्त्त का द व द्वि उ दार्थ श्र धा य रुः ॥ २०३ ॥ नृ ग्ध

२२

वा ना दि न न क य्था दूर्ग ति ना ग नः । स यः ज्ञान क र्त्त आ क र्त्त ष निः स य  
 ध र्म क र्त्त ॥ २०४ ॥ नृ न क र्त्त लु पा ले क र्त्त म यूर्त्त खि ल द्वि उः । नृ सा ल्थे क  
 उ ग क्का सो वि म्भ वं या उ य ध उः ॥ २०५ ॥ २०० ॥ नृ स म र्त्त धि कः क र्त्त य  
 षा वि धि नृ मा य तिः ह र्त्त य ष उ म्भ । म्भ मा नी वि र्त्त न का य वीः ॥ २०६ ॥  
 क म्भ या द व ना वि दः वृ ह्ना दा दे व ना दू माः न क र्त्त म्भ न वि र्त्त उः य ष  
 मु कः क वी म्भ नः ॥ २०७ ॥ म र्द धी ना दू गु र्धि म्भ ना दि य । म्भ व ति स ना दू  
 वा य व द्विः सु विः य ष म्भ क ना नृ द ना क र्त्त ॥ २०८ ॥ वि द्द रु म्भ वि र्त्त



(अ. गं धर्वा (अ. क. ना. रु. मः। व. र्मु. दि. न. ~~अ. मु. गो. नी. म. रु. य. श्री. य. ना. न.~~  
 दः॥ २०२॥ द. व. र्षि. ना. ६. या. लु. वा. (अ. र्क. ना. वा. दः. घ. वा. द. ना. ६. व. नः. य. व.  
 न. म. ना. व. न. (अ. या. द. मं. य. तिः॥ २०३॥ गं. म. ती. (अ. रु. मा. य. तं. क. ल. को. य.  
 व. नो. ष. र्धः। अ. नं. सू. द. र्म. ना. म्ना. यं. व. डं. य. रु. न. (अ. रु. मंः॥ २०४॥ उ. च्चेः  
 अ. वा. वा. जि. ना. ऊ. व. ना. व. त. ०. ह. म्भ. नः। अ. न. म्भ. ह्ये. क. य. ०. नी. (अ. अ. म्भ. रु. का.  
 (अ. व. रु. क. ना. द.॥ २०५॥ अ. य. म्भ. वि. या. वि. या. सा. य. न. व. म्भ. रु. सा. व. न.  
 :। म. नू. मि. नि. य. ति. म्भा. म्भा. सा. य. नः. का. ल. स. रु. मः॥ २०६॥ दि. ना. या.

२३

सा. य. र्ध. सि. छिः. क. पि. नः. सा. म. व. द. ना. द.। सा. र्कः. ख. ग. न्द्रा. म्भ. रु. य. य.  
 व. स. न. क. ल. य. या. द. य. ४॥ २०७॥ दा. रु. (अ. रु. का. म. (ध. नू. ना. रि. ध्या. म्भ.  
 रु. त. क. म. ३. वि. का. म. नि. गु. नू. (अ. रु. सा. ना. रि. त. त. मः. पि. ना॥ २०८॥ सिं.  
 हा. म्भ. रु. ना. ग. न्द्रा. वा. स. कि. न. व. ना. रु. मः। व. र्मु. (अ. रु. म्भ. रु. ना. य. त.  
 :. के. न. म्भ. रु. न. म्भा. न. मः॥ २०९॥ ०. न. त. दा. सू. द. व. स्य. वि. म्भ. ना. म.  
 स. रु. म्भ. रु. कं.। स. र्वा. य. ना. म. स. म. नं. य. नं. रु. कि. वि. व. रु. न॥ २१०॥ अ.  
 रु. यं. व. रु. ता. का. दि. स. र्वा. स. रु. क. सा. धे. नं.। वि. म्भ. रु. ता. के. क. सा. य. नं.

७

०

७



सर्वदुःखविलम्बनं॥ २१८॥ समस्तसुखदं सद्यः यत्र निवा  
 सदायेकं। कामकाङ्क्षादिलम्बमनोमत्तविलम्बनं॥ २१९॥  
 भाक्तिदयावनन्दनं महायातं किनामपि। सर्वेषां यालि  
 नामास्तु सर्वं लक्ष्यं लयुदं॥ २२०॥ समस्तदुःखममनं स  
 र्वत्रिष्टविनामनं। धोनेदुःखममनं तीव्रदोत्रिष्टनामनं  
 ॥ २२१॥ मूलजयाय ह्युक्तं धनधान्यमस्तनं। सर्वं धर्म  
 युदं सर्वसिद्धिदं सर्वधर्मदं॥ २२२॥ गार्थयस्तथादानं

बुद्धकाटिरुत्तयुदं। समस्तजाणाममनं सर्वविद्याय कामनं॥ २२३॥  
 गार्थदं बुद्धनामानां। गार्थिनां सर्वनामनं। विद्वानां यूपदं वासुकीना  
 नां। अवितायुदं॥ २२४॥ हतग्रहविषयं सौम्यं रुपाग्रविनामनी॥ म  
 न्नायं धर्ममायुष्यं भवत्तस्य ० नाक्यातां। सद्दस्याखिलादवासा  
 नां मन्त्राश्च काटिभः। यनालमस्तु तस्य ० मन्त्राः ० यपिनामना  
 ॥ २२५॥ अष्टाष्टकां कर्माणां वादं वाय ० तस्य यिना निर्यसिद्धिस्त  
 वं मविनालि मन्त्राखिलां॥ २२६॥ नानमसदर्मस्य ० यल्ययः







यमूदि मसुदानाक्रमद। अविदिगं वन४३३ टी एम्मानुति फा। सतप  
 सोवमू तजने४॥२३॥ तताधिकान्ति कादवात् श्रीका का मधुति म  
 मयत म्बिद्य तलि ह्यं रुयाया। गन्धन महि॥३॥ तत४३ मधिकय  
 नं श्रीयू न्वा लु माहं म४। तम विज्ञाय कं मूटा मऊ क झा म मादिन४॥२  
 ३॥ मूखितामि ल्यया नाथ विप्रं य दयमी म्ब प्र४। य कामि कान मय स्यात्  
 दाया दि य म कू य४॥२३॥ मूहा सर्व म्ब ना विषु सर्व दवा लु माह मः।  
 वदा दि शु न् मू टः सा मान् नू व वा कू त॥२४॥ महायसां हि मा हात्मा

२५

हऊमान हऊनित। दिषकायित थाया धा नू यऊ न कू या मूमी॥२४॥  
 मया हि वा ल्य स्य वि३ य जा ह क्वा व हू पि ता४। दू४ खा द म का४ ल्य या प्रां  
 मिया म्ब मि ता यू ना॥२४॥ तया मंदि हि ता ल्य म्ब य जा ल्य ए व दा दय  
 ४। विल म्ब नि व मे का या४ म्ब स ह मि उ वा म्ब वा४॥२४॥ ल्य या वि ना क  
 द व ल्यं कू म्ब यं कू य त्रि य ह४। सर्व ए व नि जी व का या न ना म्बि व स  
 कि ता४॥२४॥ ल्य म्ब त ने व ध म्ब यं ४ काम मा का हि दू न त४ कू धि ता ना  
 दूर्ग ता ना कू ता या ग म्ब मा ध य४॥२४॥ स व यं सो न मा ने का सर्व



हाके कलाय काशवसुमाकमलायस्यल्यकाल्मसपिर्मकन॥२४०॥  
 मूनीहृद्येनमोवनत्रयलर्जवसंयुदासुदीमिमयवीर्यलसंयुक्त  
 समहामेन॥२४१॥कसुनउल्यतामतिदेवदवनविष्णुनायेत्या  
 मांमवतात्रलविनासुर्वेजसायेत॥२४२॥उगदतलुथोप्याकृदाया २१  
 येतद्विभाहिताशानास्येकमकेगमलुर्नसुप्यास्यार्थउवता॥२४३॥  
 तथापि कृत्रधर्माथ्योसनायसुतांकेनामिहाययमहादवप्रलम्भ  
 कमहम्यन॥२४४॥आवेक्षयतथास्याहिकानकामेदमस्यताका

माशानकविरुताकिंउसर्वम्वनयुहा॥२४५॥तत्सयतायमादादाभका  
 मिय॥१०३॥नवतविष्णुनामसहप्रगत्यस्ययंरुषेरध्वजनामेकनउ  
 यनस्याततलुलंकुहिमयुहा॥२४६॥लोलीवनउवावनामनामति  
 नामतिनेप्रनाममनात्रमसहप्रनामगकुल्यानामनाभावनानन॥  
 २४७॥ॐतिशायययुनालमिदेषावतासंवादविष्णुर्नामसहप्रकंस  
 माकं॥संमत्ते३१मार्गमात्रमुकयुर्वुमासासामवातयुर्वुति  
 धितेयदिमुधममुधंवाममदावनदियतमुर्ह॥३॥॥॥

15

10

6



पद्म पुराण शिवपार्वती संवाद

मानदास सुगत दासया संकलनं  
बाशा लफू-कुथियात उपहार !

२५